भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

जनसंदेश टाइम्स

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 19.02.2019

गंगा बेसिन 44 करोड़ लोगों का जीवन

कहा- अंग्रेजों के बनवाए भदैनी और जल संस्थान का हो संरक्षण

वाराणसी। गंगा को जीवनदायिनी यूं ही नहीं कहा जाता। इसके तटीय क्षेत्र में रहने वाले करीब 44 करोड़ लोगों के जीवन का यह आधार है। खासकर काशी में रहने, बाबा विश्वनाथ का पूजन, गंगा जल का आचमन और संत समागम का सुख अद्भुत है। काशी की

कार्यशाला

आईआईटी बीएचयू में बोले प्रो.एसएन उपाध्याय

काशीकथा के तहत कार्यशाला में बतायी पुरानी व्यवस्था

कार्यशाला को सम्बोधित करते आईआईटी बीएचयू के पूर्व निदेशक प्रो. सिद्धनाथ उपाध्याय

भूगर्भीय संरचना भी ऐसी है कि वो गंगा को अपने पास रखती है।

यह बातें आईआईटी बीएचयू के पूर्व निदेशक प्रो. सिद्धनाथ उपाध्याय ने कही। वह सोमवार को काशीकथा के तहत आयोजित 14 दिनी कार्यशाला के दौरान सोमवार को अपने व्याख्यान में कही। उन्होंने आगे कहा कि गंगा पूरे देश को आपस मे जोड़ने की सांस्कृतिक कड़ी है। बढ़ते नगरीकरण, औद्योगीकरण, अशिक्षा का दुष्प्रभाव काशी की प्राचीनता पर भी पड़ा है। प्रो. उपाध्याय ने कहा कि 19 वीं शताब्दी तक बनारस में तालाबों की एक लंबी शृंखला थी। लेकिन अब बनारस के भूगर्भ जल का क्षेत्र कम हो रहा है। इसे बचाना होगा। बनारस में अंग्रेजी शासन में बने गोथिक शैली की जल संरक्षण वाली इमारतों एवं भदैनी पम्पिंग स्टेशन तथा भेलूपुर स्थित पानी टंकी को भी पुरातात्विक महत्व देना चाहिए।

इस अवसर पर रामनगर की रामलीला पर अरविन्द कुमार मिश्र तथा बलराम यादव ने विचार व्यक्त किया। अजय रतन बनर्जी ने बनारस की अन्य ऐतिहासिक धरोहरों के महत्व को छायाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया। अध्यक्षता प्रो. पीके मिश्र ने, संचालन डॉ. अवधेश दीक्षित ने तथा धन्यवाद डॉ. विकास सिंह ने दिया। आचार्य योगेंद्र, अजय कुमार मौर्य, विनीता, डॉ. कृष्णा सिंह, दीपक तिवारी, विकास गुप्ता, हेबा सईद, अभिषेक यादव, जय प्रकाश चतुर्वेदी, प्रकाश चंद्र पांडेय, उपेंद्र दीक्षित उपस्थित थे।